Q. - राष्ट्रीय संवैधानिक सभा के कार्यों का वर्णन कीजिए।

Ans - जिस समय फ्रांस में क्रांति अपनी चरम सीमा पर थी, उस समय देश में शांति तथा सुव्यवस्था स्थापित करने के लिए राष्ट्रीय संवैधानिक सभा ने महत्वपूर्ण कार्य किये। इनमें कोई भी शपथ के अनुसार उसे एक संविधान बनाना था। इस कार्य में बहुत कठिनाइयाँ थी क्योंकि उसे राजतंत्र के ऊपर प्रजातंत्र स्थापित करना था। कठोर परिश्रम एवं अनेक कठिनाइयों के उपरान्त इस सभा द्वारा एक संविधान का निर्माण किया गया तथा शासन में काफी सुधार हुए। यह सब कार्य राष्ट्रीय संविधानिक सभा ने केवल दो वर्ष की अवधि (अक्टूबर 1789 से सितम्बर 1791) में सम्पन्न कर लिए। अतः इसके कार्य निम्नलिखित थे।—

① सामंतवादिता का अन्त :— 4 अगस्त 1789 को होनेवाले राष्ट्रीय सभा के अधिवेशन में सामन्तों तथा पादरियों ने अपने सारे विशेषाधिकारों को त्याग दिया। गुडविन का मानना है कि वास्तव में सामन्तों और पादरियों ने स्वेच्छा से अपने विशेषाधिकारों का त्याग नहीं किया था बल्कि भय के कारण उन्होंने ऐसा किया था। 4 अगस्त की रात्रि को अग्र प्रस्ताव पास किये गये।

(a) योग्यता के आधार पर सब मनुष्यों को राज्य के समान पद प्रदान किये जाएंगे।

(b) चर्च का दशांश (Tithes) नामक कर समाप्त कर दिया गया तथा सामन्तों और पादरियों पर भी कर लगाए गये।

(c) सभी व्यक्ति एक मात्र फ्रांसीसी समझे जाएंगे, कोई भी व्यक्ति समाज के किसी वर्ग के नाम से सम्बोधित नहीं होगा।

(d) सामन्तों के विशेषाधिकार, शिकार करने, मछली पकड़ने तथा न्याय करने के अधिकार, समाप्त कर दिये गये। इसके साथ ही नगरपालिकाओं, कारपोरेशन तथा प्रान्तों आदि के विशेष अधिकारों को समाप्त कर दिये गये।

इस प्रकार 4 अगस्त को बने इस कानून से सामन्त प्रथा का अंत हो गया यद्यपि बहुत से प्रतिनिधियों द्वारा विशेषाधिकारों का समर्थन करने से इस प्रथा का अवशेष बना रहे।

(2) मानव अधिकारों की घोषणा :— 27 अगस्त 1789 ई० को राष्ट्रीय संवैधानिक सभा द्वारा रूसो के समझौते के आधार पर मनुष्यों के अधिकारों की घोषणा की गई जिसके अन्तर्गत प्रमुख बातें निम्न थीं :—

(a) प्रत्येक मनुष्यों को समानता का अधिकार प्राप्त है।

(b) मुआवजा दिये बिना किसी की सम्पत्ति का अपहरण नहीं किया जाएगा।

(c) सभी मनुष्य अपनी योग्यता के अनुरूप सरकारी पद प्राप्त कर सकते हैं। सरकारी कर्मचारी, समाज सेवा को अपना प्रमुख कर्तव्य समझें।

(d) धार्मिक स्वतंत्रता के साथ ही साथ सबको लेखन, भाषण तथा प्रकाशन की स्वतंत्रता प्रदान की गई।

(e) सबके लिए सामान्य न्याय होगा। किसी को गैर कानूनी ढंग से गिरफ्तार नहीं किया जा सकता। कानून को सामान्य इच्छा का प्रकाशन कहा गया था।

(f) राज-सत्ता (Sovereignty) राजा तथा Parliament में न होकर राष्ट्र में मानी गई थी।

घोषणा-पत्र का मूल्यांकन :- (Evaluation of the Declaration) - बहुत महत्वपूर्ण होते हुए भी इस घोषणा-पत्र में कुछ त्रुटियाँ रह गई थीं जो इस प्रकार हैं, →

(a) सर्वप्रथम त्रुटि यह थी कि अधिकारों की घोषणा के साथ कर्तव्य की घोषणा का कहीं उल्लेख नहीं था।

(b) व्यापार तथा व्यवसाय की स्वतंत्रता का कोई उल्लेख नहीं था।

(c) सार्वजनिक शिक्षा के बारे में कुछ नहीं कहा गया था।

(d) नागरिकों की सम्पत्ति का अपहरण किया जा सकता था।

लेकिन इन अनेक त्रुटियों के होते हुए भी यह घोषणा-पत्र अत्यधिक महत्वपूर्ण था। फ्रांस के लिए तो इसका वही महत्व है, जो मेग्ना कार्टा तथा बिल ऑफ राइट्स का इंग्लैण्ड के लिए और स्वतन्त्रता की घोषणा का अमेरिका के लिए है। हेजन का मत है कि "घोषणा पत्र का समस्त संसार पर प्रभाव पड़ा है।" लिओ गर्शोय

ने भी इसकी प्रशंसा की है। 'एक्टम' का कथन भी उल्लेखनीय है।[3]

(3) चर्च की जागीरें एवं मठों का अन्त – इस समय की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी; फ्रांस की समस्त भूमि का $\frac{1}{3}$ भाग चर्च के अधीन था। अतः तालीरां द्वारा 10 अक्टूबर, 1789 ई० को चर्च की जागीरें बेचने का प्रस्ताव रखा गया। मुआवजे के रूप में पादरियों को उनकी आय का $\frac{2}{3}$ भाग नियत करना निश्चित किया गया। काफी विवाद के पश्चात् यह प्रस्ताव पास हो गया। इस प्रस्ताव के अनुसार चर्च की सम्पत्ति पर सरकार का अधिकार हो गया, बदले में पादरियों एवं निर्धनों को दान-देने का उत्तरदायित्व सरकार का हो गया। फ्रांस में भिक्षुओं की संख्या बहुत अधिक होने से अनेक मठ थे। 6 फरवरी, 1790 ई० को संविधान सभा ने घोषणा की की भविष्य में कोई भी भिक्षु, भिक्षुणी न बने तथा पुराने भिक्षु, भिक्षुणियां भी सांसारिक जीवन बिता सकते हैं। इससे कई सन्यासियों ने मठों को छोड़ दिया, इस प्रकार मठों का विनाश हो गया।

(4) धार्मिक ~~क्षेत्र~~ व्यवस्था बनाए रखने हेतु संविधान बनाना – जुलाई 1790 ई० में राष्ट्रीय सभा द्वारा नामक कानून पास किया गया। इसके अन्तर्गत निम्न निर्णय लिए गए –

(i) पादरियों बिशपों का निर्वाचन जनता द्वारा होगा।

(ii) एक प्रान्त में केवल एक ही बिशप नियुक्त हो सकता था, इसलिए फ्रांस में 83 बिशपों की संख्या निश्चित की गयी।

(iii) बिशप पोप के अधीन न रहकर राज्य के अधीन रहकर कार्य करेंगे तथा समस्त धार्मिक पदाधिकारियों को राज्य से वेतन दिया जायगा।

(iv) नवम्बर 1790 ई० में यह निर्णय लिया गया कि फ्रांस के अपहरण एवं मठों के अन्त से बहुत क्षोभित हुआ। शपथ उठाने के आदेश से उसके क्रोध में और अधिक वृद्धि हुई।

पोप पायस छठा पहले ही चर्च की सम्मति के अपहरण एवं मठों के अन्त से बहुत क्रोधित हुआ। शपथ उठाने के आदेश से उसके क्रोध में और अधिकाधिक वृद्धि हुई उसने घोषणा की कि "कोई भी पादरी या बिशप शपथ ग्रहण न करें। शपथ लेने वालों को ईसाई समाज से बहिष्कृत कर दिया जाए। असेम्बली द्वारा शपथ ग्रहण न करने वाले पादरियों को पुरस्कृत किया जाए। इस सम्बन्ध में गर्शोय का विचार है, "क्रान्तिकारी विचारों को इससे अधिक हानि किसी अन्य घटना से नहीं हुई। इससे फ्रांस दो भागों में विभक्त हो गया।"

इस घटना के पश्चात् पादरियों ने राज्य का विरोध करना आरम्भ कर दिया, वे क्रान्ति विरोधी हो गए। कई पादरियों ने देश से बाहर जाकर फ्रांस की क्रांति के शत्रुओं से सम्बन्ध स्थापित किए जो कि फ्रांस के लिए अहितकारी सिद्ध हुआ। इस संविधान का एक यह प्रभाव अच्छा हुआ कि वे सब क्रान्ति के पक्षपाती हो गए जिन्हें राज्य से वेतन मिलने लगा तथा चर्च की अपहरण की हुई सम्पत्ति भी प्राप्त हुई।

(5) नवीन संविधान का निर्माण — यह कार्य राष्ट्रीय असेम्बली का सबसे महत्वपूर्ण कार्य था। वह दो वर्षों के कठोर परिश्रम के पश्चात् 1791 ई० में तैयार हुआ था। उस समय तक यूरोप में ऐसा कोई लिखित संविधान नहीं था। इस संविधान की धाराओं को देखने का ज्ञात होता है कि यह जनतन्त्रात्मक भावनाओं से प्रेरित होकर नहीं बनाया गया था बल्कि इसका निर्माण राजा के प्रति वैमनस्य से प्रेरित होकर हुआ था।

इस संविधान द्वारा निम्न व्यवस्था की गयी थी –

(i) राजा के अधिकार सीमित कर दिए गए थे। उसे कर लगाने, सन्धि अथवा युद्ध करने का अधिकार नहीं था। यद्यपि राजा प्रशासन का अध्यक्ष था, लेकिन वह प्रशासन सम्बन्धी अधिकारियों की नियुक्ति नहीं कर सकता था। उनका निर्वाचन किया जाता था। राजा इन निर्वाचित पदाधिकारियों का पदच्युत भी नहीं कर सकता था। इस संविधान द्वारा राजा की स्थिति केवल नाममात्र की थी।

(ii) मन्त्रिगण सम्राट के प्रति उत्तरदायी नहीं होंगे अपितु राष्ट्रीय व्यवस्थापिका सभा के प्रति उत्तरदायी होंगे।

इस संविधान हेतु एक भवन वाली व्यवस्थापिका सभा की व्यवस्था की गयी। इसके सदस्यों की संख्या 750 थी तथा उसके सदस्यों का चुनाव केवल दो वर्ष के लिए होता था। सदस्यों का निर्वाचन परोक्ष रूप से होता था। व्यवस्थापालिका सभा द्वारा नागरिकों को दो श्रेणियों में विभक्त किया गया –

(1) सक्रिय नागरिक, (2) निष्क्रिय नागरिक। जो नागरिक कर देते थे वे सक्रिय नागरिक कहलाए तथा उन्हें मताधिकार प्रदान किया गया। जो निर्धन एवं सम्पतिहीन वर्ग के व्यक्ति थे, वे निष्क्रिय नागरिक कहलाए। उन्हें मत देने का अधिकार प्राप्त नहीं था।

यद्यपि मनुष्यों के अधिकारों की घोषणा में यह घोषित किया गया था कि सब मनुष्य समान है, किन्तु संविधान बनाते समय सिद्धान्त की हत्या कर दी गयी। रूसो के सिद्धांत के स्थान पर मॉण्टेस्क्यू के सिद्धान्त के अनुसार कार्य किया गया। निर्वाचित पद्धति की आलोचना करते हुए एक सदस्य ने कहा था – "यदि आज रूसो जीवित होता तो फ्रांस की इस नवीन व्यवस्थापालिका सभा का सदस्य नहीं हो सकता था।"

इस व्यवस्था द्वारा न्यायाधीशों के पदों का क्रय - विक्रय समाप्त कर दिया गया। निर्वाचित पद्धति द्वारा न्यायाधीशों की नियुक्ति प्रारम्भ की गयी। न्याय निःशुल्क करने की व्यवस्था की गयी तथा सभी न्याय को समान न्याय प्रदान करने का घोषणा की गयी।

(6) आर्थिक दशा सुधारने हेतु किए गए कार्य - देश की आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु राष्ट्रीय सभा ने निम्न कार्य किए - (1) निर्धनों की सहायता करने के लिए असेम्बली ने 'चैरिटी वर्कशाप्स' की स्थापना की। (2) पादरियों और सामन्तों के विशेषाधिकार समाप्त कर दिए गए वे इससे वे अब किसानों से मनमाना वसूल नहीं कर सकते थे। (3) किसानों पर केवल भूमि - कर लगाया गया। नमक कर तथा अन्य अप्रत्यक्ष कर समाप्त कर दिए गए, व्यापार तथा उद्योग - धन्धों पर भी कर लगाए गए लेकिन अनाज का व्यापार कर - मुक्त था। स्थानीय चुंगियां तथा श्रेणियां समाप्त कर दी गयीं। (4) मजदूरों के प्रदर्शन तथा हड़ताल के अधिकार को अवैध घोषित कर दिया गया। (5) चर्च की सम्पत्ति का अपहरण किया जाना भी आर्थिक स्थिति सुधारने का एक प्रयत्न था।

राष्ट्रीय संवैधानिक सभा की त्रुटियां अथवा दोष यद्यपि इस सभा द्वारा बड़े परिश्रम के साथ संविधान का निर्माण किया गया तथा यह एक प्रगतिशील कदम था, पर इसमें अनेक दोष थे -

(1) नागरिकों के लिए घोषित अधिकारों में से बहुत से अधिकार जनता को दिए गए थे।

(2) नागरिकों को सक्रिय एवं निष्क्रिय श्रेणियों में विभाजित करके निर्धन वर्ग को मताधिकार से वंचित कर दिया गया।

Date____
Page____

(3) व्यवस्थापिका व कार्यपालिका को पृथक् करने से वे एक-दूसरे की सहायक न रहकर विरोधी हो गयी।

(4) फ्रांस को 83 विभागों में तो बांट दिया गया, लेकिन उनमें परस्पर सम्बन्ध की कोई योजना नहीं थी।

(5) पादरियों के लिए बनाए गए संविधान से धार्मिक कलह प्रारम्भ हो गयी।

(6) असेम्बली द्वारा बहुत से लोगों को प्रोत्साहन देना खतरनाक सिद्धान्त सिद्ध हुआ।

(7) विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्त से स्थानीय शासन में शिथिलता आयी।

(8) मध्यम श्रेणी के लोगों के हितों को अधिक प्रोत्साहन दिए जाने से कृषकों एवं मजदूरों को कोई लाभ नहीं हुआ। इस संविधान ने अपनी नीति तथा कार्यों द्वारा निर्धन, पादरी एवं सामन्त तीनों ही वर्गों को नाराज कर दिया।

(9) व्यवस्थापिका सभा के सदस्य दूसरी बार उसके सदस्य नहीं हो सकते थे जिससे प्रत्येक बार अनुभवहीन व्यक्ति उसके सदस्य बनते थे तथा व्यवस्थापिका सभा निर्वाचन का कार्यकाल दो वर्ष ही था जो बहुत कम था। इतनी कम अवधि में कोई व्यवस्थापिका सभा अपने उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर पाती थी।

– राष्ट्रीय संवैधानिक सभा की समाप्ति –
दो वर्ष के अपने कार्यकाल में इस सभा ने राष्ट्र के लिए एक विधान का निर्माण किया तथा 25,000 आदेश लागू किए। 21 सितम्बर को राजा ने नए संविधान को स्वीकार करके उसके अनुसार कार्य करने का वचन दिया फलतः 30 सितम्बर, 1791 ई० को यह सभा विसर्जित कर दी गयी। प्रसिद्ध इतिहासकार हैं हेनज के अनुसार, "अपने विसर्जन के पहले राष्ट्रीय सभा ने एक अन्तिम एवं अनावश्य अनावश्यक गलती कर दी।" एक प्रस्ताव पार

पास किया कि इस सभा का कोई भी सदस्य अपनी व्यवस्थापिका का सदस्य नहीं रह सकेगा। इस प्रकार दो वर्ष के अनुभव को तिलांजलि देकर संविधान ऐसे लोगों के हाथ में सौंप दिया जिन्होंने उसकी रचना में कोई माँग नहीं लिया था। आत्म त्याग की यह भावना घातक सिद्ध हुई।